॥ श्री आईजी प्रसादात् ॥

श्री आई माताजी री ओलखाण

लेखक व संकलनकर्ता

नारायणराम सीरवी (लेरचा)

बडेर, बिलाड़ा (राजस्थान)

स्व. श्री नारायणराम जी लेरचा

बडेर, बिलाडा

॥ श्री आईजी प्रसादात् ॥

श्री आई माताजी री ओलखाण

लेखक व संकलनकर्ता

नारायणराम सीरवी (लेरचा)

बडेर, बिलाड़ा

प्रकाशक

पुना बाबाजी

बडेर, बिलाड़ा

॥ श्री आईजी प्रसादात् ॥

श्री आई माताजी री ओलखाण

लेखक व संकलनकर्ता

नारायणराम सीरवी (लेरचा)

बडेर, बिलाड़ा (राजस्थान)

प्राप्ति स्थान :

१. श्री आई माताजी का मन्दिर, बडेर, बिलाड़ा

२. जगदम्बा मशीनरी स्टोर
बस स्टेण्ड, जैतारण, जिला–पाली (राज०)

●

मुद्रक :

सज्जन प्रिन्टिग प्रेस
त्रिपोलिया बाजार,
जोधपुर (राज०)
☎ 22970

●

द्वितीय संस्करण :

1000

वि० सं० २०४० दीपावली

●

मूल्य :

२)५० रुपया

●

"दो शब्द"

दिवान साहब श्री माधवसिंहजी री प्रेरणा सूं मैं संवत् २०४० रा चेत महिना में एक छोटी किताब "श्री आई माताजी री ओलखाण" संकलन करने लिखी ही। जको के मारो पेलो मोको हो। मैं कोई साहित्यकार या इतिहासकार नी हूं। पण ठिकाणा री बहियों ने परवानों सूं संकलन करने किताब लिखी ही। आई माता रा भक्त उण किताब ने घणी पसन्द की जिणरी मने घणी खुशी है। केई विद्वान पाठक मनै किताब में रियोड़ी भूलों सूं जाणकारी कराई 'मैं वोणों घणों आभारी हूं।'
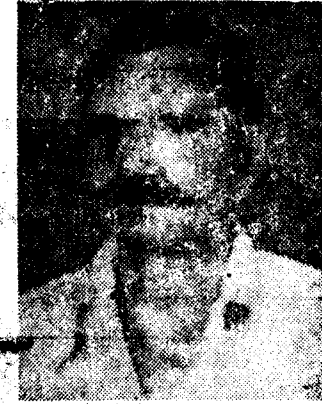
पेली वाली किताब थोड़ा समय में ई समाप्त वेगी। आई माता रे भक्तों री इच्छा जाण अबे मैं ओ दूजो संस्करण 'श्री आई माताजी री ओलखाण' रो संकलन करने लिखियो हूं। इणमें मैं घणी हावचेती राख केई बातां संकलन करने लिखी हूं। श्री शोभा बाबाजी रो इण किताब में संकलन करण में मने घणो सहयोग मिलियो। मैं वोणों घणों आभारी हूं।

विद्वान पाठकों सूं अरज है के मारी घणी हावचेती राखता थकां जे कोई गल्ती रेगी वे, उण सूं मनें जाणकारी करावजो। मै आपरो घणों आभार मानूंला।

जै आई माताजी रो।

विनीत :

संवत् २०४०
दीपावली

नारायणराम सीरवी (लेरचा)
बडेर, बिलाड़ा

श्री आई माताजी का मन्दिर
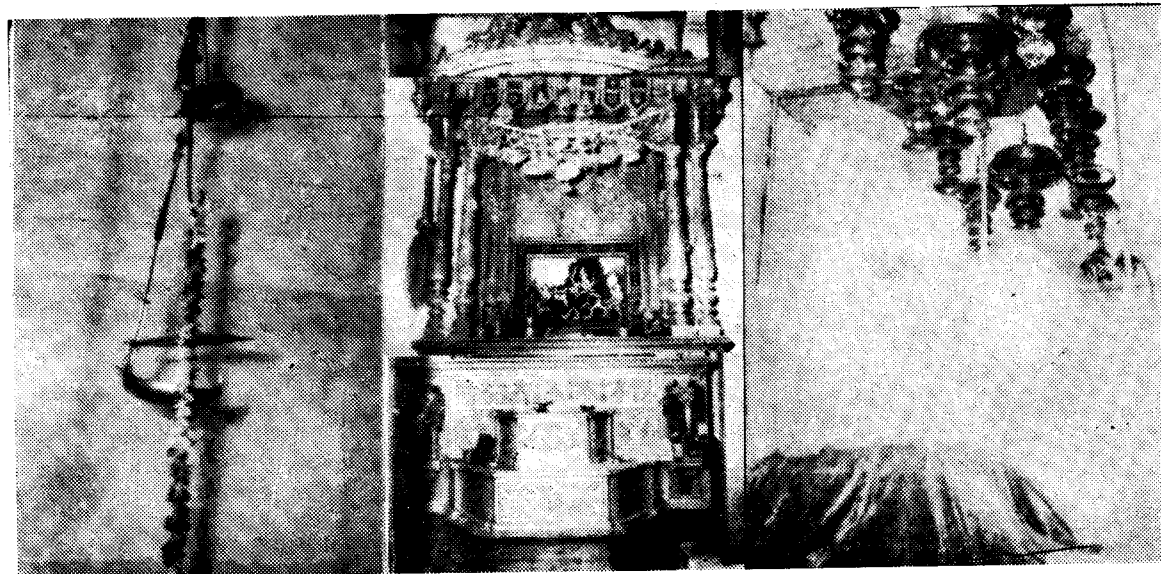
बडेर, बिलाड़ा (राज०)

"श्री आई माताजी री ओलखाण"

जब जब होता नाश धर्म का, और पाप बढ़ जाता है।
तब लेते अवतार महाप्रभू, विश्व शांती पा जाता है।।

जिण पुल में धर्म रो नाश वेवण लाग जावे, नें मानखा में पाप घणों बढ़ जावे। उण पुल में कोई महान आत्मा इण धरती माथे अवतार लेय ने मानखा ने धरम रो मारग बताय वोंणों उपगार करे। इणी तरे जिण पुल में धर्म रो नाश वेवण लागगो ने मानखा में पाप घणों बढ़ गियो, उण पुल में इण भारत री पावन धरती माथे "आई माता" अवतार लेय, मानखा ने धर्म रो मारग बताय, मानखा रो उपगार किधो।

मांडवगढ (मांडू) सूं २० मील आंतरे अम्बापुर गांव बसियोड़ो है। जको आजकल गुजरात राज में है। अम्बापुर में मां अम्बाजी रो मोटो मिंदर बणियोड़ो है। मां अम्बा रा घणा परचा है। केई दुखियों रा दुख मां अम्बा मेटिया। इण मां अम्बा रे मिंदर री देख रेख दांता दरबार करता आया है।

अम्बापुर गांव में संवत् १४४० रे आड़े-पाड़े राजपूत जाति रा डाबी गोत्र में एक करामाती पुरुष रो जन्म वियो। जिण रो नांव बीकोजी हो। बीकोजी डाबी बालपणा सूं ई मां अम्बा रा भक्त हा। आपरे घर में मां अम्बा रो मिंदर थापन कर, सांझ सवार पूजा पाठ करता रेवता हा। वरस बीतियां बीकोजी री उमर व्याव जोग वी जणें वोणा पिताजी आछी गवाड़ी ने गुणवाली लड़की देख बीकोजी रो व्याव घणा ठाट-बाट सूं कर दियो। मां अम्बा

री कृपा सूं बीकोजी ने लुगाई घणी हालच मिली । वा भी मां अम्बा री घणी भक्त ही । अबे दोनू जणा तन-मन सूं मां अम्बा री भक्ति करण लागगा ।

बीकाजी डाबी रो व्याव विवाने वर्ष बीतगा, पण वोरों सन्तान नी वी । सन्तान सारू घणा दुखी रेवण लागगा । मन में सोचता के जे अपोणे औलाद नी वीं ती इण गवाड़ी रो रूखालो कुण वेई ने अपोणों वंश आगे किकर बढो । सन्तान रे खातर मां अम्बा ने घणी भांत अरदास करता रेवता हा । केई तीरथ कीधा । केई साधू-सन्तो रे शरण में गिया । पण वोणे सन्तान नीं वी । एक दिन सवार रा बीकाजी रे द्वारे एक सन्यासी पधारिया । बीकोजी सन्यासी ने आपरे मन रो दुख दरशायो । बीकांजी री बात सुण सन्यासीजी धीरज बंधावता थकां कह्यो "आप मन में किणी भांत री चिन्ता मत राखो । आप अपणी कुल देवी मां अम्बा री भक्ति करो, आपरी मनोकामना जरूर पूरी वेई ।" सन्यासीजी री बात अंगिकार कर बीकोजी तन-मन सूं मां अम्बा री भक्ति में लागगा । भक्ति करता बरस बीतगा पण सन्तान नी वी । आखिर एक दिन सिन्ज्या रा पूजा कर बीकोजी मां अम्बा ने अरदास करी के "हे मां मैं इतरा वरस आपरी भक्ति तन-मन सूं करी । मारी इण भक्ति में कांई चूक वी जको आप मारी कामना पूरी नी करो । आज सूं मैं आपरी सेवा-भक्ति छोड़ूं हूं" आ कैय पूजा स्थान सूं ऊठ गिया ।

बीकाजी री भक्ति सूं मां अम्बा तो खुश हा । मां अम्बा मन में विचार करियो, मारो भक्त आज नाराज वे गियो है । अबे इण री मनोकामना पूरी करणी पड़सी । आ बात विचार मां अम्बा रात रा बीकाजी ने प्रत्यक्ष रूप में दर्शण दिया ।

सिंह चढ़ी मां दुरगा आई, अदभुत रूप सजाई ।
डावो भुजा खड़ी भवानी, मांग-मांग शब्द चेताई ॥

मां अम्बा रा दर्शन वेतांई बीकाजी डाबी मां अम्बा रैं चरणों में पड़ गिया ।

बारह वर्ष तप कीनो बीका, सरक्षमता पाई ।
सनमुख आई ईशरी, सफल काज मन चाई ॥

मां अम्बा बीकाजी ने कह्यो "बीका मैं थारी भक्ति सूं घणी राजी हूं । आज थूं जो वर मांगेला वी थने देऊंला । थूं मांग, थारी इच्छा जरूर पूरी करूंला ।" मां अम्बा रा वचन सुण बीकाजी मां अम्बा ने हाथ जोड़ अरदास करे ।

धन, दौलत, सन्तान कौं, अब मुझे ना चहाय ।
जिस वर की मुझे आश है, वही घर बसो आय ॥
नित उठ चरणीं मैं रहूं, सैवा करूं दिन-रात ।
ऐसी मेरी कल्पना - इस विध पूरी करो जगमात ॥

बीकाजी मां अम्बा ने अरज की के हे मां अबे मने धन, दौलत, सन्तान किणी चीज री जरूरत नी है । ऐ सारा स्वारथ रा है । मने तो आप ओ वरदान दो के आप मारे घरे पधारो । मैं आपरी रात दिन सेवा करूं । बीकाजी री भक्ति देख मां अम्बा घणा राजी वियां । मैं वरदान दियो "बीका थारी इच्छा जरूर पूरी वेई । मैं थारे घरे कन्या रूप में अवतार लेऊंला । "मां अम्बा रा वरदान सुण बीकाजी अरज करी कै "हे मां मने आपरा अवतार री कीकर मालम पड़ेला" मां अम्बा बीकाजी ने कह्यो "इण बात री थने आ खबर पड़ेला के थारा घर में सेवा रा स्थान री दिवार माथे कूंकूं रो त्रिशूल मंडेला । थारो बाग हरियो वे जावेला ।

बादला गरजेला, बिजलियां पलका पाड़ेला, कोयलों मीठा-मीठा टहूका देवेला। मोर-पपीहा मधुरा बोलेला। रंग-बिरंगा फूलों माथे भंवरा गुंजेला। वों फूलों री डाली रे नीचे थने मैं जन्मजात कन्या रे रूप में मिलूंला।" ओ वरदान देय मां अम्बा अलोप विया।

बीकाजी मां अम्बा री कृपा जांण घणा राजी विया ने आपरी जोड़ायत ने सगली बात बताई। दोनूं धणी लुगाई घणा तन, मन सूं मां अम्बा री भक्ति करण लागगा। मां अम्बा रे दियोड़े वरदान रे परमाणे संवत् १४७२ रा आड़े-पाड़े बीकाजी रो बाग हरियो वेगियो। कोयलों टहूका देवण लागगी, मोरिया मधुरा बोले। आकाश में बादल गरजे ने बिजलियां पलका पाड़े।

कोयलियां टऊका दे रही, मधुरा बोले मोर।
सूखा बाग हरा भया, मडगी हलका होल॥
चम्पो मरवो मोगरो, दाड़म फूलां डाल।
आम्बे टऊके कोयली, ने मोरिया करे मलाल॥

आ रचना देख बीकाजी ने मां अम्बा रे दियोड़ा वरदान री याद आई। आप बाग में घूमण ने गिया। घूमता-घूमता कांई देखे के रंग-बिरंगा फूल खिलियोड़ा ने वोणी डालो रे नीचे शेंष किरण लगांयो, एक नवजात कन्या सूती। बीकोजी कन्या ने देख घणा राजी विया। कन्या ने लाय आपरे घर में पालणा में सूंवोण दी।

आकाशो ऊतरी धरती झेली, नीचे फूलड़ो री परछाई।
शेंष किरण लगाये सोई बालका, यह फुलड़ो री मांई॥
सूखा बाग हरा भया, खिल रहे फूल हजार।
फूल देखतां कन्या पाई, मिट गई रेण अन्धार॥
आज रे दिन आनन्द भयो, बांटू मंगल शहर बधाई।
कूंकूं कन्या घरे आई, दुबध्या गई दुवाई॥

कन्या ने पालणा में सुलाय बीकाजी आपरे घर में मां अम्बा रे स्थान जाय देखे तो दिवार माथे कूंकूं रो त्रिशूल मंडियोड़ो। बीकाजी घणा राजी विया। धिन भाग मारा, मां अम्बा मारे घरे पधारिया। घणा हरख कोड सूं आपरी जोड़ायत ने हेलो पाड़ कह्यो—बेगा अठीने—आवो मां अम्बा अपोणें आंगणे पधारिया है। बीकाजी री बात सुण वोणी जोड़ायत झट हाथ रो काम छोड़ पालणा रे कने आया। पालणा में कन्या ने देख केवण लागा।

हाथ घालूं तो हियो धड़के, छाती धड़का खाय।
परजाई का क्या भरोसा, क्या करता क्या होय॥
ऐसी रचना देखू सहियां, हाथ लगावण मन ना होय।
कहे कन्या सुणों मेरी माता, हाथों आयो अवसर मत ना खोय॥
होना है वह हो जावसी, भगवत राखसी टेक।
मात मिलण रे कारणे, लिखिया विधाता लेक॥

बीकाजी री जोड़ायत मन में शंको करियो उण पुल में पालणा में सूती कन्या (मां अम्बा) डग-डग हंसने केवण लागा।

डग-डग हंसती बोली ईशरी, मैं कन्या तूं मांय।
इतरा वचन सुनावता, थनलो आयो दुधाय॥
क्यूं थूं डरपे क्यूं थूं विलखे, वही मैं वरदानत माता।
रजपूती घट जामो दियो, यही घर बसू माता॥

कन्या (मां अम्बा) री वार्ता सुण बीकाजी री जोड़ायत कन्या ने आपरा खोला में लीधी। इतरा में उणरें हांसलों सूं दूध री धार निकली। आ देख बीकाजी री जोड़ायत अपणों

आपने धन्य समझी, ने कन्या ने आपरी छाती रे चेप ने हांसलों सूं दूध पायो।

गोदियां लेवूं बालिका, थनलो धवाऊं दूध।
इण प्रसन्नता रे कारणे, आंखीं आसूं आं बूंध॥

कर सहित करूं वीणती, भगवत भलो दियो अणजायो पूत।
भक्ति रो फल पायो दाता, मिलगी चौरासी ली छूट॥

अबे बीकोजी जोशी ने बुलाय लग्न देखाय कन्या रो नाम निकलवायो। कन्या रो नाम जीजी राखीयो।

पदमा बैठी मावड़ी, ऊपर फुलड़ों री छांई।
बाई जलमिया भला नकतरा, जीजी नाम धराई॥
जीजी नाम बतावियो, दुमियां अचुम्भो आई।
बांटी मंगल शहर बधाई, भुआ गज थाल भर लाई॥

जीजी रो तेज रूप ऊगता सूरज जिऊं लखावतो। तेज रूप किऊं नीं वे, जीजी तो साक्षात मां अम्बा रा अवतार हा। दिन निकलता गिया। लोग देखता जकोई केवता के बीका रे घरे रत्न आयो है। दिन निकलता बरस बीतीया, जणे जीजी री उमर बारह वरस री वी, उण समय जीजी रे रूप री खबर आड़े-पाड़े फैलण लागगी।

उण दिनों मांडवगढ़ (मांडू) में महमूदशाह नाम रो बादशाह राज करतो हो। महमूदशाह एक दुष्ट बादशाह हो। हिन्दुओं माते अत्याचार वणों करतो हो। अणूतों बेईमान हो। हिन्दुओं ने जबरदस्ती मुसलमान बणाय देवतो। हिन्दुओं री बहु बेटियों ने जबरन मेहलों में घाल देवतो। केई तरह रा टेक्स लगावतो। पूरी जनता उण बादशाह रे अत्याचारों सूं आंती

आयोड़ी ही। जणे इण दुष्ट बादशाह ने जीजी रे रूप री खबर मिली तो वो जीजी ने मेहलों घालण ने उतावलो वियो।

बीका सुता स्वरूप अति, सुणियो शाह सुजाण।
अपछर तन अवतार इह, भरे पदमणी पाण॥

जीजी रो रूप देखण नें आपरी सांत सहेलियां ने अम्बापुर मेली। सहेलियां अम्बापुर जाय जीजी रो रूप देख चकन बगन वेगी। बेगी पाछी मांडवगढ़ आय बादशाह ने केवण लागी, हजूर ऐड़ो रूप नों तो आज तांई देखियो नों कदेई कानों सुणियो। आपरा मेहल में जितरी हूरमा है वां मांय सूं जीजी री बरोबरी कोई नी कर सके है।

गुण अवगुण से न्यारी खेले, रूप निरख्यो नी जाई।
पदमणी के लक्षण पावे, झूठ कह्यो ना जाई॥

जीजी रे रूप रो इतरो बखाण सुण बादशाह झट आपरा मंत्री ने बुलाय हुकम दियो के जितरी जल्दी वे सके उतरी जल्दी जीजी ने म्हारे मेहलों दाखल करो। मंत्री बड़ो समझदार हो। वो बादशाह ने कह्यो हुजूर बीको जात रो क्षत्रिय है। जीवता थकां वो आपरी बेटी ने लावण नी देवेला। आप बीका ने अठे बुलावने जीजी सूं परणीजण री बात करो। जे बीको मान जावे जणें तो ठीक नी जणे आगे और होवी। मंत्री री बात सुण बादशाह आपरा एक चाकर ने अम्बापुर बीकाजी ने बुलावण ने मेलियो। चाकर अम्बापुर जाय बीकाजी सूं मिलियो ने बीकोजी ने बादशाह बुलावण री बात की। चाकर री बात सुण बीकाजी कह्यो।

चोरी जारी कीनी नाहीं, ना कीनी शैतानी।
किम कारण हमें बुलायो, सांची कहो रजवानी॥

आ बात सुण चाकर कड़कने बोलियो। मुझे पता नहीं झटपट चलो तुम्हें जल्दी बादशाह बुलाते हैं। चाकर री बात सुण बीकाजी मांडवगढ आय बादशाह कने हाजर विया। बीकाजी ने देखतांई बादशाह बोलियो।

बीका बात सुनी मैं अनोखी, इण विध लियो बुलाई।
तेरी कन्या मुझे परणादे, कुमीं नीं राखूं कांई॥

बादशाह री बात सुण बीकाजी रे पूरा तन में झालो-झाल लागगी। जाणे काला नाग री पूंछ माते पग दियो वे जिऊं। आपरी रीस ने काबू में राख बीकोजी बोलिया। हजूर ओ काम कन्या रो है। मैं मारी कन्या ने पूछने जबाब देऊं।

बीको जबाब दियो, शाह मेरी अर्ज सुनाई।
पूछूं जाय कन्या को, उनकी मति कहाई॥

बीकाजी री बात सुण बादशाह कह्यो। झटपट जाय ने आपरी कन्या ने पूछने मने जबाब दो। आ केय बीकाजी ने जीजी सूं पूछण सारू अम्बापुर व्हीर कीधा। बीकाजी मन में घणा दुखी मूंडो उतारियोड़ा आपरे घरे आया।

बीको आ घर बिलखो बैठो, मन ही मन पछताई।
पत्नी आकर पूछन लागी, किम कर उदासी छाई॥

बीकाजी री आ गत देख वोणी जोड़ायत पूछियो, आपरी आ गत किंकर बणी। वे जकी बात मने बताओ। बीकाजी आपरी जोड़ायत री बात सुण केवण लागा।

बात अनोखी होवे रानी, मरनो भलो सिधाई।
आदू धरम जग में रहतो, न दीसे क्या करू उपाई॥

शोभा सुणी जीजी की भारी, जद माने शाह लियो बुलाई।
कहियो तेरी कन्या मुझे परणादे, कुमीं नी राखूं कांई॥
किस विध जीना अब होसी, अनहोनी हो आई।
अपणे घर शाह परणीजे, मरणों भलो धर्म कहाई॥

इतरी बात आपरी जोड़ायत ने बताय बीकाजी बोलीया मारे जीवता थकां ओ अजोग नी वे सके। ने जे ऐड़ी वेगी तो मैं मारो माथो भाड ने मां अम्बा रे चरणों में चढाय दूंला ने थूं मारे लारे सती वे जाइजे। बीकाजी री आ बात जीजी सुणली। जीजी झट आपरे पिता बीकाजी कने आय केवण लागी। "पिताजी आप मन में किणीं बात री चिन्ता मत राखो। ने उण दुष्ट बादशाह ने जायने के आवो के जीजी परणीजण ने तैयार है। ने साथे आ शर्त घालता आवजो के विवाह हिन्दू रीत सूं करणों पड़ेला। नक्का नी पढी जावेला। ने परण पेली मारे अठे आय जीमणों पड़ेला। आप मन सूं चिन्ता मिटा दो ने खुशी-खुशी जाय ब्याव रो दिन मुकर्र करने आय जावो। किणी बात री शंका मती राखो।

लिखिया लेख विधाता, टालियोड़ा नाहीं टले।
कर्म गति के कारणे, फल भोगन ही पड़े॥
शाह परणीजण की इच्छा धारी, आप करो सगाई।
मेरे कारण क्यों दुख पावो, मुझे दो परणाई॥

जीजी री आ बात सुण बीकोजी बोलिया।

क्यों लाज गमावे धर्म हटावे, भूंडा लगावे जग मांई।
ऐसे जीवन से मरना भला, लाज धर्म तो रहे जग मांई॥

अपणा पिता बीकाजी री बात सुण जीजी केवण लागी। "पिताजी मारो जनम (अवतार) इण धरती माथे फैलियोड़ा अत्याचार मिटावण ने, मानखा रे धर्म री रक्षा करण ने वियो है। इण दुष्ट बादशाह रो अत्याचार घणो बढ़ गियो है। अबे इण रो नाश करणों पड़सी। जिण सूं मानखा में सुख शान्ती वे सके। आप किणी बात री शंका मन में मती राखो। जीजी री बात सुणताई बीकाजी झट जीजी रे चरणों शीश नवायो।

बीकोजी अम्बापुर सूं व्हीर वेने मांडवगढ़ आय बादशाह सूं मिलिया। बादशाह ने कह्यो जीजी परणीजण ने तैयार है पण ब्याव हिन्दू रीत सूं करणो पड़ेला। नक्का नी पढो जावेला, ने परणिया पेली भोजन मारे घरे आय करणों पड़ेला। बीकाजी री बात सुण बादशाह कह्यो ठीक है। जैसे जीजी चाहती है वैसा ही होगा। पण मारि साथे लाखों री फौज आवेला। इतरा आदमियों रे खावण-पीवण री इन्तजाम थूं किकर करेला। थारे जिण चीज री जरूरत वे वा थूं अठा सूं लेजा। बीकोजी कह्यो मैं कन्या परणावण सारू की चीज आपरे कनांसू नी लेऊं। कन्या रे नाम रो एक पईसो भी नी लेऊं। आ केय बीकाजी ब्याव रो दिन मुकर्र कर पाछा आपरे घरे अम्बापुर आयगा।

मुकर्र करिया दिन माथे बादशाह बनड़ो बण घणा ठाट-बाट सूं बरात बणाय, आपरी लाखों आदमियों री फोज साथे लेय मांडवगढ़ सूं रवाने वियो।

अढाई लाख कसाई, चार लाख सिसोद।
पांच लाख तुरक, छः लाख राठोड़।।
इतने बसती लेकर आये, बीका के द्वार।
महम्मदशाह बनड़ो बणियो, हंस कर करे जवार।।

बादशाह री बरात अम्बापुर आय गांव रे बारे डेरा दिया। ने आपरे आवण री खबर बीकाजी ने करवाई।

जान आई शहर में, लोग देख थरराई।
बीका देर मतना करो, हमको दो परणाई।।

बादशाह रे आवण री खबर सुण बीकाजी बादशाह कने आया ने खावण-पीवण री सगली चीजों आपरे कनां सूं खर्च करण रो ना केय, पाछा आपरे घरे आय जीजी ने खबर कराई। जीजी खावण-पीवण री चीजों रो ऐड़ो इन्तजाम करियो के सगली चीजों अखूट करदी। कांई करियो के आप तो एक झूंपड़ी में बिराज गिया। ने आपरी एक सहेली ने बारणा माथे बैठाय दी। पछे बादशाह ने खबर करवाई के आपरा आदमियों ने जीमण ने मेलो। खबर पावताई बादशाह रा आदमी जिमण ने जीजी री झूंपड़ी पूगिया। जीजी, बादशाह रे आदमियों ने चांदी रा थालों में केई भांत रा भोजन पुरस-पुरस ने मांगे जिण सूं सवायो भोजन देवता गिया। सगला लोग जिमता रिया ने चांदी रा झूठा थाल मेलता गिया। झूठा थालों रो खिड़को लागगो आ रचना देख सगला लोग घणों अचम्भो करियो। बादशाह रा आदमी जाय बादशाह ने सगली बात बताई। आ बात सुण बादशाह सोचियो के बीको इतरो सामान कठा सूं लायो। जरूर इणमें कीं चाल है। अपोने हाल ने सगली बात देखणी चाहिजे। सागेई जीजी री रूप भी देख आवों। आ बात सोच बादशाह सिन्ज्या री पीर रा फकीर रो रूप बणाय ने जीजी री झूंपड़ी पूगो।

जीजी तो साक्षात मां अम्बा रा अवतार हा। बारे ऊभा फकीर रा वेष में बादशाह ने ओलख लियो। मन में विचार करियो के अबे इण दुष्ट ने चमत्कार बतावणों पड़सी। आ बात सोच जीजी झूंपड़ी सूं बारे पधारिया। बारे आवताई जीजी

रो तेज रूप देख बादशाह मुर्छित वे ने हेटो पड़ गियो। थोड़ी ताल पछे मुर्छा टूटी जणे बादशाह उठने दोड़ने लागो। उण पुल में जीजी माता आपरो सिंह-वाहिनी रूप धारण कर दोड़ता बादशाह ने ललकारियो। "रे दुष्ट जावे कठे है। मैं तो थारा सूं परणीजण ने आई हूं ने थूं आगे दोड़े" मां भवानी रो रूप देख बादशाह थर-थर धूजण लागो।

सिंह रूप देखने थर-थर धूजियो, राम धर्म याद बन आई।
माता बचावो अब मुझको, आ गौरव ने सताई।।

बादशाह आय मां भवानी रे चरणों में पड़ियो ने हक-लावतो-हकलावतो हाथ जोड़ वींणती करे।

तूं जगदम्बा जोगणी, ब्रह्माणी वरदाय।
मैं अग्यानी मूढ मति, निज जन करो सहाय।।

सुभ स्वरूप दरशन दयौ, वर दीनो मन शुद्ध।
पूरब भक्त प्रभाव हित, उपजिए तुम बुद्ध।।

बादशाह मां भवानी ने अरज करे "हे मां मैं मूरख अग्यानी आपने ओलखी कोनी। मने आप माफ करावो। अबे आप जेड़ी देवियों सूं तो कांई हिन्दू मात्र सूं बेर नी राखूला। छोटी सो बहन ने बड़ी सो मां समझूं। कुरान री सोगन्ध खाय ने केऊं हूं के अबे हिन्दूओं रे साथे अत्याचार नी करूला। बादशाह री बात सुण जीजी माता उणने केई शर्तो अंगिकार कराय ने छोडियो। बादशाह बीकाजी ने आपरा गुरू बणाय ने मां अम्बा रो मोटो मिंदर बणवायो। पछे जीजी माता सूं माफी मांग पाछो आपरी फोजलेने मांडवगढ़ गियो।

जीजी मां रा चमत्कार सुण हजारों लोग दर्शण करवाने अम्बापुर आवण लागा। रात-दिन अम्बापुर में मेलो भरियो

रेवण ने लागगो। जीजी माता केई दुखियों रा दुख मेटिया। अम्बापुर एक मोटो ग्राम बण गियो। केई बरस बीतिया एक दिन जीजी अपणों पिताजी बीकोजी ने कह्यो। "पिताजी मैं अबे एकान्त जागा में तपस्या करनी चाऊं हूं। अठे लोगों री भीड़ रे कारणे मारी तपस्या वे नी सके। इण सारू कोई एकान्त स्थान देखो।" दोनूं बाप बेटी तपस्या करण सारू मारवाड़ में बीलपुर रो चुनाव करियो। जठे बावनी गगा बेवे। स्थान घणो पवित्र है। दोनों ने दाय आय गियो।

तपस्या सारू स्थान रो चुनाव करियो पछे जीजी माता एक दिन आपरो जरूरी सामान एक पोठिया (बैल) उपर लादने अम्बापुर सूं बीलपुर आवण सारू व्हीर विया।

रमती आई आद भवानी, हो गुजरात सिधाई।
दर्शन करन सब जन आवे, देवी ज्ञान सुणाई।।

जीजी माता अम्बापुर सूं चालता आगे मार्ग में आपरा पोठिया ने कणेई तो नाहर बणांय देता, कणेई बूढो बैल, कणेई टोगड़ियो। ने आप भी कणेई वृद्ध रूप धारण कर लेता, कणेइ छोटी बालीका नें कणेई जवानी रो रूप धर लेता। तरे-तरे रा रूप धरता मारवाड़ में आवण लागा। चालता थकां साराऊं पेलो जीजी माता वृद्ध रूप धारण करने मेवाड़ राज रा, आडावला पहाड़ री तलहटी में बसियोड़ा गांव नारलाई में पधारिया। नारलाई में पहाड़ रे उपर जेकलजी (महादेवजी) रो मिंदर बणियोड़ो हो। साधू सन्यासियों री विचार धारा है के नारलाई गांव नारद मुनि रे बसायोड़ो है। जेकलजी रा मिंदर में तपधारी साधु-सन्त रेवता हा।

जीजी माता आपरा पोठिया ने एक खूंटा रे बांध ने पहाड़ उपर जेकलजी रे मिंदर पधारिया। मिंदर रा पुजारी संत जीजी माता ने

देख प्रणाम करने केवण लागा। "हे जगत री जननी आप सतवंती देवी हो तो मैं मांगू जको परचो मने दिरावो। नहीं तो आप अठा सूं आगे पधारो। अठे नी ठवणों" पुजारी री बात सुण जीजी माता कह्यो "हे जेकलजी रा पुजारी आप माता सूं कांई परचो मांगो। मने बताओ।" जीजी मां री बात सुण पुजारीजी केवण लागा। मां जी इण पहाड़ ने थोथो करदो ने इण में ज्योति जलाओ। पुजारीजी री बात सुण जीजी माता आपरे हाथ रो सोवन चिटियो उण पहाड़ रे लगायो। चिटिया रे लाग-त ई उण पहाड़ में धर-धर करती एक खोह बणगी। पछे जीजी माता आपरे हाथ सूं तेज चालती हवा में ज्योति जलाई। ने ज्योति ने उण खोह में थापन कीधी। उण ज्योति रे ऊपर केशर पड़ियो। पुजारीजी जीजी माता रो चमत्कार देख चरणों में शीश नवायो। जेकलजी में जीजी माता उण खोह में आपरो मिंदर कायम करियो। जको आज तांई है ने आज दिन उण अखण्ड ज्योति ऊपर केशर पड़े।

एक पलक में खलक मचावे, पार तेरा ना पाई।
सारा जगत तूं ने रचाया, नाना खेल दिखाई॥

नारलाई में माताजी रे मिंदर उपर हजारों डोराबन्द आज भी घणा आगा-आगा सूं दर्शण करण ने आवे। ने आपरा टाबरों रा झड़ोला उतारे। आज दिन नारलाई में माताजी रो वो रे वो परचो है। जिण ठोर जीजी माता आपरो पोठियो बंधियों। उण खूंटा रो नांव खूंटिया बाबजी पड़ियो। वो खूंटो (खूंटिया-बाबजी) आज दिन नारलाई में सीरवी जात रा पिड़िहार गोत्र री गवाड़ी में है। जिणरे जात देवे ने पूजा करे।

जेकलजी रा पुजारी जीजी माता ने अरज करी के "हे माता आपरो कांई धर्म है ने कांई नेम है। मांने बताओ" पुजारी

री बात सुण जीजी माता बोलिया।

जेकल ने जलगांजी बीच, धरणो विसवा बीस।
भेटी सके तो भेट ले, जेकल ने जगदीश॥

इतरी बात माते पुजारीजी समझीया कोनी। ने जीजी माता रे चरणों शीश नवाय बैठ गिया। तणे जीजी माता कह्यो। "पुजारीजी जोत केशर मारो रूप है। इणने पेला-पेल थे आसापुरी धूप खेवजो। मीठा भोजन रो सदाव्रत कासी करजो।" जीजी माता केई दिन नारलाई में बिराजिया। परचा सुण आड़े-पाड़े रा हजारों लोग जीजी माता रा दर्शण करणने आवण लागगा। जीजी माता लोगों ने ज्ञान री बातां बतावे ने केई दुखियों रा दुख दूर कीधा। जीजी माता ने तो तपस्या करण सारू बीलपुर आवणो हो। एक दिन नारलाई सूं आगे रवाने विया। चालता थकां देपारा रा तावड़ा में गांव डायलाणा पधा-रिया। डायलाणा गाँव रे ऊगूंण दिश में साधारण बेरा रा जाव में आय ऊभा रिया। तावड़ो घणों पड़तो हो। नेड़ो कोई रूखड़ो नींगे नीं आयो। नी नेड़ो पोठिया रे पीवण ने पाणी निगे आयो।

जेठ मास गर्मी री महिनों, लूओं बहे लपटाई।
प्यास कारण जीव सिधारे, बुरी हालत बन आई॥

उण जाव में करसा हल खड़ता हा। जीजी माता आपरो वृद्ध रूप धारण कर, हल खड़ता करसों ने कह्यो। "भाया मारो पोठियो तिरसो है। थोड़ो इणने पाणी पाय दो।" जीजी माता री बात सुण करसा केवण लागा।

ना कोई कुओ, बावड़ी, ना कोई सरवर तलाव।
ना कोई बरसियो मेहलो, सूखा पड़िया ताल तलाव॥

करसां री बात सुण माताजी केवण लागा । "भाया मने सांमी नदी में खादरो पाणी सूं भरियो दिखे है । उठे जाय थोड़ो मारे पोठिया ने पाणी पायदो ।" करसां नदी सामों जोयो तो वोंने सूखोड़ी नदी में खादरो पाणी सूं भरियोड़ो दीखोयो ।

कला देख आनन्द भयो, करसा मन हर्षाई ।
पाणी बताग्रो ईशरी, सूखे ताल के मांई ।।

ग्रा रचना देख करसा जीजी माता रे पोठिया ने नदी माते जाय ने पांणी पायो । ने ग्रापस में केवण लागा । ग्रा डोकरी जरूर कोई करामाती है । सगला करसा ग्रापरा हल छोडने, जीजी माता चरणों शीश नवायो ।

हलियो तजकर ग्राये सीरवी, चरण शीश नवाई ।
सूरज तपे लगे तावड़ो, करसा मन ही मन पछताई ।।

तावड़ो घणों पड़तो हो । ग्रा देख जीजी माता, करसां ने कह्यो, "भायां थोड़ी मारे बैठण सारू छिया तो करदो ।"

तावड़िया री तिड़की बेटा, म्हें किरणें तपू ।
थोड़ी छिया बनाग्रो बीरा, पल भर ग्राराम करू ।।

जीजी माता री बात सुण ने करसा हल ने ऊभो करने उण रे ऊपर घास रा पूला डालने जीजी माता रे बैठण सारू छिया करदी । हल री हाल बड़ला री लकड़ी री बणियोड़ी ही ने उणरे भंवाड़ा में एक राईण री लकड़ी री सिंवल लाग्योड़ी ही ।

ना कोई बरसियो मेहलो, सूखी रह गई वनराई ।
तावड़िया री तिड़की पड़े, थोड़ी छांया तो बनाई ।।

छांया ग्राकर बैठो माता, चित में चेन पड़ जाई ।
पोहर तीसरे ग्राप पधारजो, जावों मैं घर तांई ।।

जीजी माता उण हल रे बणयोड़ी छिया में विराज गिया । सिन्ज्या रा सगला करसा तो ग्रापरे घरे गिया ने जीजी माता उठे इज विश्राम कीधो । जीजी माता रे चमत्कार सूं उण हल रो बड़लो बण गियो ने उपर एक राइण ऊग ग्राई ।

गिर प्रचन्ड की तलहटी, डायलाणे शुभ थान ।
देवपुरी निज जानि के, जीजी वट प्रगटाय ।।

इण विध वड़ उधार किय, हरे दुष्ट ग्रतिभार ।
ग्रबै पधारे बीलपुर, प्रगट लखे संसार ।।

दिन री उगाली करसा खेत में ग्राया तो खेत में हल री ठोर बड़लो देख घणों ग्रचम्भो करियो । केवण लागा ।

खेत खड़ता केई दिन बीता, बड़ नी देखा कोई ।
हल री थोड़ मिलियो बड़लो, बड़ो ग्रचुम्भो थाई ।।

ग्रा रचना देख ग्राड़े-पाड़े रा लोग सुणता जकोई दर्शण करण सारू ग्रावण लागा । उण बड़ रो नांव जीजी बड़ राखियो ने माताजी रो मिंदर थापन कर, ग्रखण्ड जोत जलाई । जिण रे ऊपर केशर पड़ियो । जको ग्रखण्ड जोत ग्राज दिन कायम है ने उण रे उपर केशर पड़े । जको कोई हाचा मन सूं उण जीजी बड़ रे हेटे बैठने ग्राराधना करे तो उण रे मन री मनोकामना जरूर पूरो वे । ग्राड़े-पाड़े रा डोरा बन्द जीजी बड़ रे जात देवे ने ग्रापरा टाबरों रा भड़ोला उतारे । ग्राज दिन उठे माताजी रो वो रे वो परचो है ।

डायलाणा में जीजी बड़ प्रगटाय ने जीजी माता ग्रागे चालिया । दिन री ऊगाली गांव भैंसाणा रे तलाव रे कनाकर निकलता हा । उण पुल में एक गवालियो ग्रापरी भैंसिया ने लेने कांकड़ में चरावणने जावतो हो । गांव भैंसाणा में गवालियों रो

ग्रत्याचार घणों हो। वे ग्रापरे मन री मरजी रे पांण हरेक रे खेत में भैंसियों ने चराय देवता। जे कोई ना केवतो तो होटा माथे जोर राखता हा। पूरो गांव गवालियों रे ग्रत्याचार सूं ग्रांती ग्रायोड़ो हो। ऐड़ी पुल में गवालियो जीजी माता रे सांमी भिलियो। जीजी माता ने देख गवालियो केवण लागो "ऐ जोगणी कठीने सवार सांणती ग्राडी ग्राई है। ग्रागी वेजा। मारी भैंसियों ने भिड़काई। गवालिया री बात माथे जीजी माता कीं ध्यान नीं दियो ने ग्रापरा हाल में चालता रिया। ग्रा देख गवालिया ने रीस ग्रायगी। रीस में ग्राय जीजी माता रे लारे फेंकण सारू भाटा सोधण लागो। ग्रा देख जीजी माता गवालिया ने कह्यो "भाया कांई सोधे रे, थारे भाटा चाहिजे तो जा तलाव में ने उणरी पाल माते घणाई भाटा पड़िया है। थारे चाहिजे जितरा लिग्राव। जीजी माता री बात सुण गवालियो तलाव कांनी जोयो। तो कांई देखे के उणरी सगली भैंसियों रा भाटा बणियोड़ा तलाव में ने पाल माते पड़िया है। ग्रा रचना देख गवालियो घणों डरियो। ने ग्रायने जीजी माता रे चरणों में शीश नवायो। घणी भांत माफी मांगी। पण ग्रबे कांई वे गवालिया ने उणरी करणी रो फल मिल गियो।

भैंसाणा रा गवालिया रो गरब गाल जीजी माता ग्रागे चालिया। ग्रागे चालतां थका बगड़ी ने सहवाज रे बिचे एक रूखड़ा री छिंया में ग्रापरो पोठियो बांध ने थोड़ो विश्राम करण सारू ढबिया। उण पुल में सहवाज रे बेरा री एक मालण बतवा री ग्रोडी भरने गांव बगड़ी में बेचण ने जावती ही। मालण जीजी माता रे कनाकर वेने निकलण लागी, जणे जीजी माता उण मालण ने पूछियो, "बाई थारी ग्रोडी में कांई है ने थूं कठे जावे है।" जीजी माता री बात सुण मालण बोली, "मांजी मारी

ग्रोडी में बतवो है ने मैं गांव बगड़ी में बेचण ने जाऊं हूं।" मालण री बात सुण जीजी माता कह्यो, "बाई ग्रोडी मायलो बतवो मारे पोठिया ने नांक दे। ग्रो भूखो है। मैं थने इणरा पईसा दे देऊं।" जीजी माता री बात सुण मालण ग्रापरी ग्रोडी मायलो बतवो पोठिया ने नोंक दियो। तणें जीजी माता ग्रापरा पल्ला सूं खोलने एक सोना री मोहर उण मालण ने दी। ने कह्यो, "ग्रबे थूं ग्रोडी लेने साग बेचणों बंद कर दीजे। ने खेती बाड़ी रो काम करजे। थारे घणोई बधापो वेई। मालण सोना री मोहर ले ली ने मन में विचार करियो के ग्रा डोकरी के तो भोली है ने के इण ने कम दिखे। जणे एक ग्रोडी बतवा री एक सोना री मोहर दीधी है। मालण जीजी माता कने ग्रोडी नीं करण रो हूंकारो भर पाछी ग्रापरे बेरा माते ग्रायगी। मन में घणी राजी ही। हाल दिन घणोई हो। मालण मन में विचार करियो के हाल दिन घणोई पड़ियो है। हालो नी ग्रोडी भर गांव बगड़ी में बेच ग्रावों वा डोकरी नां कियो तो कांई, वा की ग्रबे उठे बैठी रेई। वा तो गी परी वेला। ग्रा बात विचार ग्रापरी ग्रोडी बतवा सूं भरने गांव बगड़ी में बेचण ने व्हीर वी। ग्रागे रास्ता में देखे तो जीजो माता उठेइज विराजिया। उण पुल में मालण ग्रापरा ग्रोरणा रो भालो करने, जीजी माता रे कनाकर निकलणने लागी। ग्रा देख जीजी माता उण मालण ने हेलो पाड़ने कह्यो, "बाई मैं थने ग्रोडी बेचण रो नां कियो नी। पण थारो जीव रीयो कोनी। जा ग्रबे थूं रोज ग्रोडो बेचजे ने इतरोईज लाइजे ने खाइजे। इणसूं ग्रागे थारे बधापो नीं वे।" ग्रो वरदान दे जीजी माता तो ग्रागे चालिया ने वा मालण गांव बगड़ी में ग्रोडी रो साग बेचण ने गी।

इण बात ने ५०० वर्ष बीतगा। पण सहवाज रा माली जीजी माता रे दियोड़ा वरदान माथे कीं ध्यान नीं दियो। इण बार सहवाज में सरपंच माली जाति रा हरजी चुणिजिया सरपंच हरजी ने जीजी माता रा दियोड़ा वरदान रो ध्यान आयो सरपंच आपरी जाति रा बुढ़ा-बुढ़ा मालियों ने सिमजी, केसाजी, लिछमणजी, अनजी, भेरजी ने आ बात की। सगलो ने बात जंची। एक दिन सगला मालियों ने जको के करीब १०६ घर है। भेला कीधा ने जीजी माता रे वरदान री बात करी। सगला जणा चन्दो करियो। जको ७५ हजार रुपिया विया। वों रुपयों सूं अपणों समाज रो भवन बणायने उण भवन में आई माताजी रो पाट थापन करण रो विचार करियो। पण पाट थापण री विधि सूं जाणकार नीं हा। उणी पुल में आई माताजी री वैल जको गांव-गांव घूमती गांव सेहवाज रे कनाकर निकलती ही। गांव में आ बात मालूम पड़ताई दो-चार माली वैल (रथ) कने आया। वैल रे साथे श्री सोभा बाबाजी ने श्री पूना बाबाजी ने सगली बात बताई। बाबाजी मालियों री भक्ति देख पाट थापन री तिथि तै करी। संवत् २०४० रा चेत सुद पूनम ने दिन मुकर्र करियो। उण दिन सगला गांव रा माली आई माताजी री वैल ने जठे जीजी माता बगड़ी ने सहवाज रे बिचे विश्राम करियो हो। उठा सूं घणा ठाठ-बाट सूं बधाय ने आपरा समाज रा भवन में लाया ने आई माताजी रो पाट थापन करियो ने अखण्ड जोत कायम कीधी। सगला माली आई माताजी रा भक्त बणियां ने आ सोगन्ध खादी के मोरे गांव में कोई माली दारू मांस रो सेवन नीं करेला। आई माताजी री कृपा से सहवाज रा माली अबे आ बात अंगिकार करे कै लारला दिनों सूं अबे इण वर्ष मोरी खेती-बाड़ी बहुत अच्छी है। ने सगला रे घरों में खुशी है। इण कलजुग

में आई माता रो वो रे वो परचो है। चाहिजे हाची आस्ता। जको हाचा मन सूं ध्यावे वोणे वास्ते तो आई माता आज पूठ पाछे ऊभा है।

सहबाज में पेली सीरवी बसता हा पण किणी कारणे संवत् १८५२ में ठाकुर साहब श्री केशरीसिहजी री वार में सगला सीरवी सहवाज ने छोड दूजा गांवों में गिया परा। वोणी आड़ में सहवाज रे सिरे दरवाजा माथे गधो गाड़ दियो हो। इण वर्ष जणे आई माता रो पाट थापन करियो जणे सगला गांव रा भेला होयने उण गधा ने उखाड़ ने आ आड़ तोड़ी ने सीरवियों ने आपरा गांव सहवाज में बसाया। इण पाट थापन रे उत्सव रे दिन सगला माली जीमण सारू एक समय रा जीमण ने लापसी बणाई। पण आई माताजी री कृपा सूं इतरो बधापो, रिद्धि-सिद्धि वी के वा लापसी सगला गांव वाला तीन समय तक जींमी तोंई नी खूटी। गायों ने खवाड़ी तोंई लापसी बचगी। आई माता हाथो-हाथ परचो दियो। अबे सगला माली आई माता री भक्ति करे जिण जगा आई माताजी विश्राम करियो हो उण ठोर एक छोटो कमरो बणाय ने उणमें आई माताजी रो मिंदर कायम कर दियो।

सहवाज सूं चालता थकां जीजी माता आगे सोजत वेने सूकड़ी नदी रे किनारे-किनारे चालता हा। सूकड़ी नदी रा किनारा माते एक सीरवी जिणरो नांव बीलो हो। ढाणी आई। जीजी माता बीला री ढाणी रे कनाकर निकलता हा, उण पुल में बीलोजी घणा आदर भाव सूं जीजी माता ने तलेम कीधा ने आपरा आंगणा में विश्राम करायो।

आवो माता आसन बैठो, महर करो महमाई।
कृपा करने दर्शन दीना, दुबध्या दूर गंवाई॥

बीलाजी री जोड़ायत भी घणी धर्मात्मा ही। वेई ग्राय जीजी माता रे चरणों में शीश नवायो। वोणी भक्ति देख जीजी माता वरदान दियो।

बहू मात के पाये लागी, सिर पर हाथ धराई।
चूड़ो चूंदड़ी ग्रमर थारो, घर ग्रानन्द सुख थाई ॥

बीलाजी री ढाणी सूं रवाने वेती पुल में जीजी माता बीलाजी ने वरदान दियो।

बीला राज करो भांया मांणो, ढाणी बधो सवाय।
घर ग्रानन्द सुखी रहो, ग्रा मोरी ग्राशीस होय ॥

ग्रा ग्राशीस देय जीजी माता बीलपुर ग्रावण ने ग्रागे व्हीर विया। जीजी माता रे वरदान सूं बीलाजी री ढाणी बढ़ने मोटो गांव बणगी। जको ग्राज बीलावास है। बीलाजी री ढाणी री जागा एक मिंदर कायम कर उठे जीजी माता रो पाट थापन करियो।

उठा सूं ग्रागे जीजी माता नीव रा खारिये वेने बीलपुर ग्राया। बीलपुर रे दिखणाद दिश में जठे ग्राजकल नवोड़ा बेरा है। वोणे पाड़े पड़िया तालर में थोड़ो बिश्राम करणने ढबिया। ग्रापरे पग री मोजड़ी खोलने भाटकी। उण मोजड़ी सूं पड़ियोड़ी रेत सूं उठे एक छोटी पाल बणगी। जिण माथे जीजी माता रो थान थापन करियो ने उण पाल रो नांव जीजी पाल राखियो। ग्राज ऊठे डोरा बन्द पूजा करे, ग्रापरा टाबरों रा भड़ोला उतारे।

उठा सूं ग्रागे चाल जीजी माता बीलपुर में साराऊं पेली नगाजी हांबड़ री गवाड़ी में पधारिया। नगाजी हांबड़ मातबर घणा हा। ग्रापरा धन रा गुमेज में रेवता हा। कदेई दान-पुन्न में नी समभता हा। लोगां कनाऊं दूणो डोडो ब्याज लेवता हा।

जीजी माता नगाजी हांबड़ री गवाड़ी जाय कह्यो। भाया मै एक छोटी झूंपड़ी बणायने थांरी गवाड़ी में बसूं।

पोठियो बांधियों देवी पोल में, खिड़की में धरिया पांव।
शरणो लेकर बांधू भोंपड़ी, बसूं गवाड़ी रे मांय ॥

ग्रा बात सुण धन में गेला वियोड़ा हांबड़ बोलिया। "ऐ जोगणी थूं मारी गवाड़ी में बैठी भूंडी लागे। मारे टाबरों ने डराई, ग्रठा सूं ग्रागे चाल।"

ग्रागे ही साम्पत मोकली, सुणजे जोगण मांय।
भैंसिया बिखोरे थारी झूंपड़ी, गायों खोसे मे खाय ॥
हटजा डोकरी डावे कानी, बाछड़िया भिड़काई।
गायां, भैंसा, भैंलिया चमके, ठोकर में रूल जाई ॥

ग्रा बात सुण जीजी माता हांबड़ों ने कह्यो "भायग थोड़ी दया करो, रात पड़गी है। ग्रबे अंधारा में मैं कठे जाऊं।"

दया धर्म घट में राखो, गौरव में गुण नाई।
रात ग्रंधारी ग्रागे न जाऊं, ग्रासण देवण दो बिछाई ॥

इतरी बात सुण हांबड़ों ने रीस ग्राईगी ने रीस में केवण लागा।

किऊ हाका करे कुत्ता भुंचावे, किऊ बाछड़िया भिड़कावे।
भागजा भूंडी दिसे बेसुर बोले, किऊ बुढापे धोला लजावे ॥

धन में गेला वियोड़ा हांबड़ों रो ग्रो बरताव देख जीजी माता केवण लागा "मैं ग्रबे ग्रठे कोनी ढबूं, ग्रागे चालूं।"

गायों भैंयों रो गरब मत भाखो, मत राखो रोटी रो जोर।
भैंसियां रा भाटा हीवसीं, गायों ले जावसी चोर ॥

गोरियों रा थम्भ होवसी, बाछड़िया बणसी नाहर ।
ओ दिन बीता अवसर न आवसी,
जाऊं हांबड़ों मैं राठोड़ों रे द्वार ॥

इतरो वचन केय जीजी माता हांबड़ों री गवाड़ी सूं आगे चालिया । आगे जाय राठोड़ जाणोजी री गवाड़ी में ढबिया । जाणोजी रे दरवाजा माते ऊभा रेय हेलो पाड़ियो । आवाज सुण जाणोजी री जोड़ायत बारे आया । बारे आवताई जीजी माता ने देख घणा आदर भाव सूं तलेम कीधा । तणे माताजी बोलिया ।

राखो रात राठोड़ो बीरा, थारे पांवणी आई ।
एक पोठियो साथे म्हारे, और कछु ना लाई ॥

जीजी माता री बात सुण जाणोजी री जोड़ायत घणा आदर भाव सूं माताजी ने आपरा आंगणा में लाया । आंगणा में आय दोनूं बैठा ।

दोनूं ई डोकरियां रिल मिली, मिलगी तन लगाय ।
जुगत करने पूछे जोगणी, सुणजो बेनहड़ मांय ॥

कठेज बांधू पोठियो 'न' कठेज धरू पाट ।
कठेज बांधू झोपड़ी, कठे बसाऊं बास ।

आ बात सुण जाणोजी री जोड़ायत हाथ जोड़ वीणती करी । ओ घर आपरो है । आपरी इच्छा वे जठे पोठिया ने बांधो, ने आपरी मरजी वे जठे झूंपड़ी बांधो । आ सुण माताजी पोल में नीमड़ा रे नीचे आपरो पोठियो बांधियो ने पछे आंगणा में आपरी झूंपड़ी बांधी । उण झूपड़ी में आपरो मिंदर कायम करियो ने अखण्ड जोत जलाई । जिण माते केशर पड़ियो । आज काल उण जागा बिलाड़ा रो बडेर वणियोड़ो है ने मिंदर में अखण्ड जोत उंपर आज दिन केशर पड़े है ।

जीजी माता बीलपुर में संवत् १५२१ रा भादवा सुद बीज शनिवार ने पधारिया हा । उण दिन सूं लोग जीजी माता ने आई माता रे नाँव सूं ओलखने लागा ।

संवत पनरे सै वरस, इकवीसे इत आय ।
भाद्रवा सुद द्वितीया तिथी, वार शनेश्चर भाय ॥

प्रात: समैं आवन भयो, ले पोठियो इक साथ ।
वृद्ध रूप फुन पोठ इक, लिय त्रिशूल निज हाथ ॥

जय-जय शब्द पुकार जिय, सुरनर हरख कराय ।
अम्बा आई बीलपुर, नीब निकट बैठाय ॥

अबे आई माता राठोड़ों री गवाड़ी में झूपड़ी बणाय उठे आपरो वास कीधो । उठीने माताजी रे दियोड़ा श्राप सूं हांबड़ों रे भेंसियो रा भाटा बण गिया, गायों चोर ले गिया, गोरियों रा थम्भ बण गिया । घर में अन्न रो टोटो पड़ गियो । आ लीला देख मन में दु:खी वियोड़ीं हांबड़ों री लुगायों ने नगाजी हांबड़ रे बेटा, बीला रे एक लड़की ही जिणरो नांव शोढी हो वा बड़ी धर्मात्मा ने मां अम्बा री भक्त ही.। केवण लागी "थोने धन रो घमेज हो । घरे आयोड़ी देवो ने थे अठासूं काढ दी । वों देवी रो ओ श्राप लागो है । अबे थे जाय उण देवी सूं माफी मांगो ।" आ बात सुण हांबड़ घणा डरिया ने जाय आई माता रे चरणों में पड़िया । घणी भांत माफी मांगी । तणे आई माता कह्यो भायों श्राप लागोड़ो तो थाने भुगतणो पड़सी, थे धर्म-पुन: छोड दियो धन में गेला वेगा । अबे आगे सूं थे मारी कोटवाली करजो ने आगे सूं थांरा वंश रा हांबड़ इज मारी कोटवाली करेला । बीलाजी री बेटी शोढी आई माता री सेवा में रेगी । वा अबे आई माता रो सेवा करे । आई माता शोढी सूं बेटी जेड़ो वरताव राखे ।

अबे जाणोंजी ने वांणी जोड़ायत आई माता री सेवा करे ने घणी भांत भक्ति करे। पण वोणे मन में एक दुःख हो जिणसूं वे रात-दिन दुःखी रेवता। दुःख ओ हो के जाणोंजी रे माधव नांव रो एक बेटो हो जको किणी कारणे बारह बरस री उमर में घर सूं नाराज होयने निकलगो। उण रो कीं पतो कोनी हो।

माधव नाम एक पुत्र म्हारो, हमको गयो छिटकाई।
उण बिन चित में न चेन पड़त है, रो-रो नेण गंवाई॥

माधव घर सूं निकलने रामपुरा जाय उठे रावजी कने चाकरी करण लागगो। माधव होनहार तो होईज रावजी उणरा काम सूं घणा राजी हा। थोड़ा बरसा पछे माधव ने आपरी फोज रो नायक बणाय दियो। एक बार एक मुगल बादशाह रामपुरा माथे हमलो कर दियो। उण हमला ने माधव आपरी वीरता ने हुशियारी सूं नाकाम कर दियो। इण काम सूं रावजी राजी होय माधवजी ने तीन गांव अरल्हेर, आमद ने हासलपुर री जागीर दे दी। ने आपरा खास सिरदार बणाय दिया। रामपुरा में जाय माधव तो घणों नांव कमायो, पण अठे जाणोंजी ने वोणी खबर कोनी ही। वे रात-दिन दुःखी रेवे। रोज आई माता ने माधव री खबर करण सारू वीणती करे। जाणोंजी रो दुःख देख एक दिन आई माता जाणोंजी ने कह्यो "थे मन में चिन्ता मती राखो। माधव आपरो घणों नांव कमायो है। वो अबे जल्दी आय जावेला"। आई माता री बात सुण जाणोंजी आई माता रे चरणो शीश नवायो ने अरज करी "हे माता आप मारा माधव ने जल्दी बुलाय दो। अने एक बार उणरो मूंडो बताय दो। मैं माधव ने आपने सूंप देऊंला"। आई माता खुश वेने जाणोंजी ने कह्यो।

माधव पावे माल हजारों, धीरज धरो घट मांई।
तूठो राव राज से छूटो, दिन इग्यारह घर आई॥

आ बात केय आई माता माधवजी री मां ने एक इग्यारह तार रो बणियोड़ो डोरो दियो। ने कह्यो "इण डोरा रे रोज सवार रा एक गांठ लगावजो। माधव आवे जठा तक गांठ लगावता रेजो। माधव री मां आई माता रे दियोड़े डोरे ने अंगिकार कीधो ने रोज सवार रा उण डोरा रे एक गांठ लगावे।

उठीने आई माता आपरो दूसरो रूप बणाय रामपुरा पधारिया। रामपुरा रा एक कुआ माथे आपरो चीर ओढायने उण अधर आसन माथे विराजमान वेगा। आपरो जोगणी रूप धारण कर लियो। माथा रा बाल बिखोर दिया। शरीर रो रंग कालो कर दियो। विकराल रूप धारण कर आसन माथे विराज आप ध्यान लगायो। उठीने मेहलों में पलंग माथे सूथोड़ा रावजी नीचे पड़ गुलाछो खावण लागगा। पाछा पलंग माथे सुवे तो नीचा पड़ जावे। अठी उण कुआ माथे आ रचना देख शहर रा नर-नारी देवी रा दर्शण करणने आवण लागा। लोगों री भीड़ मंडगी। आ खबर रावजी कने पूगी तो रावजी अलबाणो पगों दोड़ता-दोड़ता कुआ कने आय आई माता रे चरणो शीश नवायो। ने अरदास करी। हुकम मारा सूं कांई चूक वी जको आप ओ विकराल रूप धारण करियो। आप मने हुकम दरावो।

शोर भयो जब अचरज थायो, रावजी जांच कराई।
अधर आसन कुए पर देखा, अद्‌भुत रचना बताई॥

रावजी आई माता रे चरणों शीश नवाय अर्ज करे आप मारो राज चावो तो मैं दे दूं। आप मांगो जकोई देऊं पण आप ओ विकराल रूप छोड़ दरावो। रावजी री बात सुण आई माता केवण लागा।

धन माया न चाहिये, न चाहिये राज ।
माधू हमको चाहिए, और न है कोई काज ॥

आई माता री बात सुण रावजी अर्ज करी के आपरो हुकम-मान मैं माधव ने घणा ठाट-बाट सूं बीलाड़े रवाने कर देऊं। आई माता तो उण कुआ सूं अलोप विया। ने रावजी जाय माधवजी ने घणा ठाट-बाट सूं बिलाड़े जावण सारू विदा करिया। माधवजी रामपुरा सूं रवाने वेय इग्यारवे दिन बिलाड़े पूगिया। बिलांड़े आय आपरा माता-पिता सूं मिलिया। माता-पिता घणा राजी विया ने माधव ने ले जाय आई माता रे चरणों में शीश नवायो।

दिन इग्यारह बीत गये, माधव घर आई।
ऊगो म्हारे सोने रो सूरज, जननी सुत मिलाई॥

माधवजी री मां आई माता रे दियोड़े उण डोरे रे इग्यारे गांठा लगाय दी ही। आई माता वो डोरो लेय माधवजी रे जीमणा हाथ रे बांधियो ने कह्यो ओ म्हारे पंथ रो डोरो है। इणने आदमी जीमणों हाथ रे ने लुगायां गला रे बांधजो। आई माता साराऊं पेली माधवजी रे हाथ रे डोरो बांध आपरो पंथ चलायो। जिणरो नांव आई पंथ राखियो ने डोरा रो नांव बेल राखियो। आई पंथ रा मानणियों ने डोराबन्द केवे। आई माता किणी जाति सूं भेद-भाव नो राखियो। कोई ऊंच-नीच रो भेद नीं राखियो। हर जाति रा आई पंथ रा डोराबन्द है। जको आज मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, मद्रास, बेंगलोर, पूरा राजस्थान में निवास करे।

आई माता आपरे डोरा (बेल) रा नियम बताया ने कह्यो जको इण बेल ने बांधेला। उणने भूत-प्रेत, डाकण नीं लागेला। निर्धनियां ने धन मिलेला। निपूतियों ने पुत्र मिलेला। बेल रे

बगेर अपणा शरीर ने अपवित्र मानजो, पाणी तक मत पीजो, बेल टूटता पाण दूजी बेल लायने बांधजो। किणी डोराबन्द री मृत्यु वे जणे आदमी रे हाथ रे ने ओरत रे गला रे बेल बन्धि-योड़ी राखने जमीन में समाधि देजो। बेल आई पंथ रो पवित्र डोरो है। इणरो सदा ध्यान राखजो ने बेल टूटता पांण पाछी बांधो जणे ओ जाप बोलणो।

"बेल रो जाप"

कांकण काचो सूत रो, तार ईग्यारह ताम।
गांठ ईग्यारह फाबता, बांधिजे गुरू नांम॥

हाथ जीमणे पुरूष रे, स्त्री गले अनूप।
हनुमान अवतार दस, अति हित चित चूप॥

डोरो आई मात रो, साचो बांधे सोय।
मन चाह्या कारजसरे, विघन न व्यापे कोय॥

भूत-प्रेत, जख्य-डाकणी, देव पितर कोई दोष।
डोरो बांधे मात रो, जम करे नहीं जोश॥

मिले अपुत्रा पुत्र-बहु, निर्धनियां धन माल।
कोढ़ कलंक सारा टले, सही टले जमसाल॥

आई माता माधवजी ने आपरो पंथ बताय ने अबे लोगा ने आई पंथ रा डोरा बन्द बणावे। माधवजी अबे आई माता री सेवा करे ने सागेई आई पंथ रा डोराबन्द भी बणावे।

उण दिनों मेवाड़ में राणा कुम्भा राज करतो हो। राणा कुम्भा रे दो कंवर हा। एक तो उदयसिंह (उदल) ने दूसरो रायमल। एक बार कंवर उदल मेवाड़ रो राज लेवण सारू आपरा आठ आदमियों ने लेय सूतोड़ा कुम्भा रे माथे हमलो कर

दियो। कुम्भो तो अपरबली हो। वो आंठोई आदमियों ने मार उदल ने घायल कर बेटो जाणने जीवतो छोड़ दियो। ने रायमल नें बुलाय ने कह्यो थूं मने मूंडो मत बता। ने मारे राज सूं बारे निकलजा। आपरा पिता रो हुकम सुण रायमल मेवाड़ छोड़ मारवाड़ में आयगो।

कुम्भा रे दोय कंवर, राज विलसे राजेसर।
जेठो उदो कंवर, बियां रायमल बहादर॥

एक समय उदल, द्रोह पित हूत उपायो।
धावड़िया ले आठ, अरध निश मारण आयो॥

पोढियो राणा उपर पलंग, उण पर बध उदे लियो।
जणा आठ जमदड़ गहि, कुम्भा ने लोहड़ कियो॥

रायमल जिण पुल में मारवाड़ में अठी-उठी फिरतो हो। फिरतो-फिरतो रायमल एक दिन सोजत आयो। सोजत में रायमल आई माता रा परचा ने चमत्कार सुणियां। सुणतांई सीधो बिलाड़े आय आई माता रे चरणों में शीश नवायो। अबे अठे आई माता री भक्ति करे। ने आपरो दुःख आई माता ने निवेदन करियो। एक दिन आई माता राजी होय रायमल ने वरदान दियो के "रायमल जा थने मेवाड़ बक्षी" पण पेली एक महिना तांई मेड़ते जायने वास करो। आई माता री बात सुण रायमल सीधो मेड़ते जाय वास कियो।

राणा या रायमल, मात मुख हुता दक्खे।
त्यारी की तसलीम, वचन वंदियो परक्खे॥

पाट कठे मूं झनूं, अरज कुंवर गुदराई।
तो दीधो चीतोड़, एम मुख अक्ख आई॥

एक मास रहे जो मेड़ते, पछे माय जाए पगे।
तो पाट हुसी चितोड़ रो, ओलग उसरम आलगे॥

एक महिनो मेड़ते रेवता बीतो। उण दिनों मेवाड़ रा राणा कुम्भा रो स्वर्गवास वे गियो। सगला सिरदार विचार कर मेवाड़ री गादी उपर बैठावण तारू रायमल ने कागद लिखियो। रायमल ने कागद मिलतांई, मेड़ता सूं रवाने वेय पेली बिलाड़े आय आई माता रे चरणों में शीश नवायो। ने आई माता ने अरज करी के "आप मने मेवाड़ रो राज दियो। आप अबे हाल ने मेवाड़ में वास करो। मैं आपने दस गांव भेंट करूंला। रायमल री बात सुण आई माता कह्यो मने गांव नीं चाहिजे ने थे जाय घणा ठाट-बाट सूं मेवाड़ रो राज करो। इण उपरांत रायमल आपरा राज मेवाड़ रा गांव डायलाणा में आई माता ने ५०० बीघा जमीन भेंट करी। ने आ प्रतिज्ञा की के जको मारे वंश रो मेवाड़ री गादी माथे बैठेला वो आई माता ने ५० बीघा जमीन भेंट करेला। जको जमीन भेंट नीं करेला वो मारे वंश रो कुपात्र वेला। रायमल री आ प्रतिज्ञा मेवाड़ में राणा राज रियो जठा तक पीढी दर पीढी निभावता गिया।

होसी आई पाट जको, कमधंज अवतारी।
बीघा धर पचास, राणा देसी छत्रधारी॥

वले बड़ी मोहताद, राणा लिख अवचल अप्पे।
पड़हर जाता तणा, गांव डायलाणे थप्पे॥

मोहताद बीघा पचास री, कीधी पीढी वृत करे।
धर न दे तको कुपुत्र घर, इम राणा रायमल उच्चरे॥

अठीने माधवजी आई माता रो सेवा करे। ने लोगों ने आई पंथ रा डोराबन्द बणावे। एक समय बरसाद रे दिनों में आई

माता कह्यो "बरसाद वेगी है जायने खेतों में जवार बायदो। थोड़ी मारे पोठिया रे चारा साऊई बाइजो। आई माता री बात सुण २०-२५ करसा हल लेय बिलाड़े रे दिखणाद दिशा में बड़ा अरट बेरा रा जाव में जाय जवार बावण लागा। देपारा रा आई माता एक छोटा सा छिबोलिया में चार रोटियां लेयने बड़ा अरट रा जाव में पधारिया। एक रूखड़ा री छिया बैठ, सगला करसों ने हेलो पाड़ियो। भायों आवोरा देपारी करलो। आई माता री बात सुण सगला करसा हल छोड़ आई माता रे कने आयने बैठ गिया। करसा छोटो छिबोलियो देख माताजी ने कह्यो। मांजी आप तो एक जणा रे खावे जितरी रोटियां लाया हो। मों इतरा जणों रो पेट कीकर भरीजेला। करसां री बात सुण आई माता कह्यो "थे सगला बैठो मैं सारों ने देपारी कराऊं।" आ केय आपरा हाथ सूं छिबोलिया मांय सूं रोटियां काड-काड ने करसों ने देता गिया। करसा बड़ा प्रेम सूं खावता गिया। जणे सगला करसा देपारो करली। तोंई छिबोलिया में चार रोटियां बचगी। आ देख करसा घणो अचम्भो करियो ने आई माता रे चरणों में शीश नवायो। सिज्यारा सगला करसा जवार बायने पाछा आपरे घरे आया।

अठीने नगाजी हांबड़ रे बेटा बीला री बेटी शोढी—जको आई माता री सेवा करती ही। उणरी उमर जणे ब्याव जोग वी तणे आई माता शोढी रे जोड़ रा वर री खोजना करी। पण आई माता ने शोढी रे जोड़ रो वर निगें नीं आयो। आखिर आई माता विचार करियो के जे शोढ़ी रो ब्याव माधव रे सागे करदों तो ठीक रेई। आ बात सोच आई माता जाणोंजी ने माधव रे ब्याव री बात बताई। आई माता री बात सुण जाणोंजी केवण लागा। माधव ने तो मैं आपरे सुपर्द कर दियो हूं। जिऊं आपरी

मरजी वे जिऊं करावो। जाणोंजी री बात सुण आई माता माधवजी ने आपरे कने बुलाया ने शोढी सूं परण री बात करी। आ बात सुण माधवजी मन में थोड़ा शंकिया ने आई माता ने अरज करी के मैं पेली रामपुरा में शोढा जाति रे राजपूतों रे उठे परणीज चुको हूं। अबे ओ ब्याव किकर वे सके। आ शोढी जात री सीरवी है। सीरवी न मालूम कुण जात है। मैं इणरे साथे ब्याव किकर करूं। माधवजी री बात सुण जीजी माता कह्यो "माधव थूं मन में किणी बात री शंका मती राख। सीरवी असल में राजपूत है ने सिरवियों री उत्पत्ति राजपूतों सूं वी है। मैं थने सीरवियों री उत्पत्ति रे बारे में बताऊं। थूं इणों में भेद मती जाण।

कुल उत्पत तोने कहूं, सुण माधव चित धार।
विप्र आदि च्यारू वरण, स्वधाता संसार ।।

क्षत्री कुल में प्रगटना, धरा थम्भ रन धीर।
यामें भेद न जानिये, जुध स्वारथी बडवीर ।।

सोवनगढ़ सिर कोप कियो, अलाउद्दीन सुरताण।
रजपूतां सांका किया, विखो भयो रा जांण ।।

भाज गया केता भिड़े, अमल किये असुराय।
छोड़ धरा जालोर दिश, मरूधर बसे जु आय ।।

सकटी जोते सांत सौ, सरिता लूणी आय।
सीर करे हल हासियो, खेती अन्न निपजाय ।।

बड़ साखां सोहड़ बड़े, शूरवीर दातार।
सीर कियो तब सीरवी, सउ दाखे संसार ।।

असल जात ख्यित भुज सदा, मैं समझाऊं तोही।
अन्तर इनसे जिन करो, सक्त-भक्त जै हो ही ।।

आई माता माधवजी ने सीरवियों री उत्पत्ति रे बारे में बताय कह्यो। थू सीरवियों सूं अन्तर मत कर, सीरवियों रो आचरण ऊंचो है। जे थू सोढी सूं ब्याव करलेला, तो लाखों सीरवी थारे केणा में चालेला। माधवजी आई माता रे मुख सूं इतरी बात सुण सोढी रे साथे परणीजण री हांबल भरी। अबे आई माता शुभ मोहरत देख घणा ठाट-बाट सूं माधव ने सोढी रो ब्याव कर दियो। अबे दोनूं आई माता री सेवा-भक्ति करे।

एक दिन माधवजी आई माता ने अरज करी के आप मारे साथे गांव-गांव पधारने डोराबन्दों ने दरसण दिरावो। माधवजी री बात सुण आई माता कह्यो "मारी अवस्था अबे पैदल चालण री कोनी। इण वास्ते मैं चाल नी सकूं। आ बात सुण माधवजी एक रथ बणवायो। उण रथ में आई माता ने विराजमान कर आप सागड़ी बण गांव-गांव पधारिया। उण रथ रो नाव वैल राखियो। आई माता रथ (वैल) में विराजिया गांव-गांव चालता थका बिलावास पधारिया। बिलावास गांव वाला आई माता ने घणा ठाट-बाट सूं बधायने आपरा गांव में लिया। घणाई लोग आई माता रा डोराबन्द बणिया। उठा सूं आगे चालता गांव-गांव घूमता आई माताजी नाडोल, ढालोप, बाबा गांव ने केई गांव घूमता गांव कोटड़ी पोंछिया। गांव कोटड़ी रा लोग घणा हरख-कोड सूं आई माता ने बधाया। सिज्यारा गांव री चोपाल में सत्संग वी। गांव कोटड़ी में एक गुसाई बाबा डूंगरगिरीजी (जको देवगढ़ मदारिया सूं आयोड़ा हा) रेवता हा। गुसाईजी भी आई माता रे कने जाय चरणों में शीश नवायो। गुसाई डूंगर गिरीजी कने चार चेला हा। आई माता गुसाईजी ने कह्यो "गुसाईजी, आपरे कने चार चेला है ओं मांय सूं दो चेला मने दे दिरावो, मारे बिलाड़े मिंदर री देखरेख ने वैल साथे फिरण सारू।

आई माता री बात सुण गुसाई डूंगरगिरीजी आपरा दो चेला रूपगिरीजी ने केशरगिरीजी ने आई माता ने सूंप दिया। आई माता वो दोनूं चेलो ने साथे लेय ऊंठा सूं रवाने विया। आगे रस्ता में गांव-गांव फिरता थका पाछा बिलाड़े पधारिया। बिलाड़ा रा लोग घणा हरख कोड सूं आई माता ने बधायने लिया। आज-काल भी आई माता री वैल (रथ) जणे बारा सूं गांव-गांव घूमने पाछो बिलाड़े साल में चार बड़ो बीजों ने (चेत सुद्ध बीज, वैसाख सुद्ध बीज, भादरवा सुद्ध बीज, माघ सुद्ध बीज) आवे जणे बधायने लेवे। आई माता वीं दोनूं चेला रूपगिरीजी ने केशरगिरीजी ने आपरे कने राख दिया। आगे वे दोनूं चेला आपरा चेला बणावता रिया. जिणसूं आ बाबा मण्डली बणी जंको आज-काल वैल (रथ) रे साथे ने बिलाड़े मिंदर में रेवे। ओं मांय सूं जको योग्य ने हुशियार वे उणने जती बणावे। जको वैल ने मिंदर री देख-रेख राखे। जिण किणी डोराबन्द रे सन्तान नीं वे जणे वो बोलवा करे के हे आई माता मारे सन्तान वेतांई पेहलो लड़को आपरे चरणों में सूंप देऊंला। आई माता री कृपा सूं उणरे सन्तान वे जावे जणे उणने आई माता रे चरणों में सूंप देवे। जको बाबा केवाड़िजे। अे बाबा आजीवन ब्रह्मचारी रेवे। किणी डोराबन्द रे अपंग सन्तान वे तो वो उण बालक ने आई माता रे चरणों में सूंप देवे। आई माता री कृपा सूं वो बालक बिल्कुल ठीक वे जावे। ने उणने बाबा बणाय देवे। ऐड़ा अपंग बालक जको अठे आयां पछे ठीक विया, वे आज ताई आई माता रे मिंदर में बाबा मौजूद है। आई माता केई दुखियों रा दुःख दूर करिया। केई लोगों ने सन्तान दी। आज भी आई माता रो वो रे वो परचो है।

माधवजी ने शोढी आई माता री तन, मन सूं सेवा करे। आई माता री कृपा सूं संवत् १५३० में माधवजी रे कंवर जलमीयो। जिणरो नांव गोयन्द राखियो। गोयन्द बालपणा सूं ई आई माता रो भक्त हो। वरस बीतता गिया। संवत १५५५ में माधवजी रो स्वर्गवास वे गियो।

चवदे सै चोरासिये, जन्मे माधवदास।
पनरे सै पचापने, कियो सुरग मधवास ।।

माधवजी रो स्वर्गवास विया पछे गोयन्ददासजी आई माता री सेवा करे ने आई पंथ रा डोराबन्दों री साल सम्भाल राखे। गोयन्ददासजी री भक्ति सूं आई माता घणा राजी हा। एक दिन संवत् १५५७ रा माघ सुदी बीज शनिवार ने आई माता, सगला डोराबन्दों ने भेला करने गोयन्ददासजी रे कूं-कूं सूं तिलक कर गादी ऊपर बैठाय ने दिवाण री पदवी दी। ने सगला डोराबन्दों ने कह्यो। गोयन्द आज सूं मारो दिवाण है।

म्हारे गादी पुत्र तूं, गोयन्द सुण सुख पाय।
देवी रो दिवाण पद, दीनो तब चित लाय ।।

पनरे सै सतावने, माघ मास शनवार।
सुभ्र पख्य की बीज दिन, आई वचन उच्चार ।।

आई माता गोयन्ददासजी ने गादी उपर बैठाय सांमीं अखण्ड जोत राख, आप वोणै पूठ पाछे ऊभा रेयने सगला डोराबन्दों ने आई पंथ रा उपदेश दिया।

(१) ओ पंथ च्यार जुगां रो छे। (२) इण धरम री राह गुरूमुखी हुवे जिणने बतावजो। (३) थूल कने इण मारग री बात करजो मती। (४) किणी धरम री निन्दिया करजो मती। (५) किणी रो मरम छेदन करजो मती। (६) चोरी-जारी

करजो मती। (७) किणी नूं करतो देखो तो जीभ करने दाखवजो मती। (८) करणी आवे तो जीव सूं उपगार करजो। (९) पण किणी जीव नूं कष्ट उपजावजो मती। (१०) पराया जीव नूं कष्ट करोला, जितरोई आपरा जीव नूं कष्ट प्राप्त हुसी। (११) कठेई जीव मरतो हुवे, जठे हर भांत करने ऊभा रहिजो ने छुडाइजो। (१२) तथा जिण जागा जीव मरे जठे ऊभा रहिने पाणी पीजो मती। (१३) आपरो वश नीं पूगे जीव छुडावण रो तठे और जिण रा हाथ रे डोरो न हुवे; जो इण मारग में न हुवे तिणरे हाथ रो पाणी पीजो मती। (१४) कूड़ बोलजो मती। (१५) ब्याज लेजो मती। (१६) जुवे रमजो मती। (१७) अभख भखजो मती। (१८) दारू, मांस, भांग, अमल, कफ, काई आचरजो मती। (१९) थूल स्त्री नूं आभड़जो मती। (२०) साध स्त्री री चोरी करजो मती। (२१) पईसा साटे बेटी परणावजो मती। (२२) ब्रह्म, अतीत, षटदर्शण री निंदा करजो मती। (२३) साधा रा मेला री बात किणी आगे किजो मती। (२४) साध मारग सांचवता क्रोध कीजो मती। (२५) लोभ रे घालिया अकरम कीजो मती। (२६) आपरा स्वारथ रे वास्ते किणी जीव नूं कष्ट देजो मती। (२७) पेट में न मावे जसी बात हुवे तो पिण किणी आगे दाखवजो मती। (२८) इतरा थोक पालिया छे सो इण मारग रो इदकारी हुवे, ने गुरूमुखी हुवे। तिणसूं द्रोह कीजो मती। ने इतरा काम साधु हुवे सो कीजो। (२९) परभाते ऊठने धरती ने तीन तलेम कीजो। धरती मां रो रूप है। (३०) पछे गुरू री आज्ञा माफक पीराण पाटी रो जाप कीजो। (३१) पछे दांतण करने, ज्ञान रूपी जल सूं स्नान कीजो। (३२) पछे ब्रह्म-ज्ञान रूपी सेवा कीजो। (३३) गुरू फुरमाया वचनों रो जाप करजो। (३४) सदावरत ांमों कराा-

मूंठ करजो। (३५) धूप खेवजो ने सांझ-सवेरे ध्यान करजो। (३६) इण गादी बैठे तिणने साक्षात् मोंनूं जाणजो। (३७) इण गादी बैठने बोले छे सो हूं बोलूं छूं। करे छे सो हूं करूं छूं। इण गादी उपरे सदा सर्वदा मोंनूं जाणजो। आ गादी मों बिना निमखण्ड खाली मती जाणजो। (३८) जोत माहे, वैल माहे ने गादी उपरे हूं छूं। (३९) गादी रो बेसणहार कहे सो करजो ने करे सो देखा-देख मती करजो। (४० धरम रे पेंडे चालजो। (४१) जीव दया पालजो। (४२) मीठा भोजन करने म्हारो ध्यान स्मरण करजो। (४३) थावर री बीज, उजाली री तिथ पालजो। (४४) बीज रे दिन दूध-दही साधों रे मूंडे वरतावजो, सो सारो भोग मोंनूं पोंचसी। (४५) गुरू रा पायल लेजो। (४६) भला भोजन करने घणा हरख कोड करने परसाद करावजो। सो सरब मोंनूं छे। (४७) सो साध छे ने धरम में सावधान छे किरिया सहित चाले छे। तिणरे रोम-रोम में हूं विराजूं छूं। (४८) बिजेई सरब में हूँ छूं पिण साध रे हिरदा में निकेवल हूँ छूं। ने म्हारो वासो छे।

आई माता आपरा डोराबन्दों ने आई पंथ रा उपदेश दिया। अबे गोयन्ददासजी आई पंथ रो प्रचार करे। हजारों लोग आई माता रा दर्शण करने आवे ने आई माता केई दुखियों रा दुःख मेटिया। एक समय संवत् १५६१ रा चेत शुद्ध बीज शनिवार ने आई माता सगला डोराबन्दों ने भेला करिया ने कह्यो "मै सांत दिनों तक गुप्त तपस्या करणी चाऊं हूं। थे सांत दिन तक मारे मिंदर रा कपाट मती खोलजो। जे सांत दिनां पेली कपाट खोल दिया तो घणा पिछताओला। आई माता री बात सुण सगला बांडेरू बोलिया "हे मां मोरे ओ नेम है के मों आपरा दर्शण करिया बिना अन्न-जल ग्रहण नीं करों। भला सात दिन आपरा

दर्शण करियां बगेर मोंरा ने मोंरा टाबरों रा प्राण निकल जाई। बांडेरूओं री बात सुण आई माता सगलों ने समझावता थकां बोलिया 'थे सगला अबे गोयन्द रा दर्शण कर अन्न-जल ग्रहण करजो। मा में ने गोयन्द में कीं भेद मत जाणजो। मैं म्हारी ज्योति गोविन्द में प्रविष्ट करूं हूं। आ केय आपरा मिंदर रा कपाट बन्द कर दिया।

दो-तीन दिन पछे केई लोग केवण लागा के आई माता तो समाधि ले ली। कोई केवे आई माता अपों सूं नाराज है। मूंडा जितरी बातां करणने लागगा। अबे गोयन्दजी माथे कपाट खोलण सारू जोर देवणने लागगा। आखिर घणो जोर दियो तणे आखिर पांचवें दिन आई माता रें मिंदर रा कपाट खोल दिया। सगला बांडेरू मिंदर रे मांयने गिया। पण वांने सांमी गादी माथे आई माता नींगे नीं आया। आकाश कानी जावती एक जोत नींगे आई। गादी माथे आई माता रो भगवो चोलो, पगों री मोजड़ी, ग्रन्थ ने माला मिलिया। सगला बांडेरू घणाई पछताया पण अबे कांई वे। आई माता रो केणो मानीयो कोनीं। आई माता तो अलोप वेगा हा। संसार में आई माता इज एक ऐड़ी देवी अवतरी जको के अलोप विया हा।

पनरे से इगसठ में, चेत सुद्ध शनि बीज।
आई अन्तर-ध्यान हुए, राज गोयन्द रीज॥

आई माता ने अलोप वियाने आज ५०० वर्ष बीतगा। पण आई माता रो भगवो चोलो, मोजड़ी, ग्रंथ ने माला आज दिन वेड़ा रे वेड़ा है। साथेई आई माता रे लायोड़ा पांच लूंबरा नारियल हाल-तांई लारला ५०० वर्षों सूं एड़ा-रे-एड़ा है, जाणे आज रा लायोड़ा वे जिऊं। ओ सगली चीजों री साल में चार बड़ी बीज

(चेत्र सुद्ध बीज, वैसाख सुद्ध बीज, भाद्रवा सुद्ध बीज, माघ सुद्ध बीज) ने गुप्त रूप सूं पूजावे। आ पूजा दिवान साहब, जतीजी ने पुजारीजी करे। ओ चारों बीजों सूं भाद्रवा री बीज ने बड़ो तेंबार मानियो है, इण दिन आई माता री अखण्ड जोत ने बदल ने दूजी नई जोत कायम करे। आज दिन आई माता रो वो रे वो परचो है। चाहिजे हाचो आस्ता। जको हाचा मन सूं ध्यावे वोणे वास्ते आई माता पूठ पाछे आज दिन ऊभा है।

"बोलिये आई माता की जै"

'आई माता रा परचा'

आई माता डायलाणा में, जीजी वड़ प्रगटायो।
इच्छा पूरी जांण जी री, माधव ने बुलवायो।।

माधव रे कर बांध डोरो, आई पंथ चलायो।
लाला खोलिया जेलों रा, रोहित ने पुजवायो।।

रायमल ने राज दीनों, मेवाड़ पति कहलायो।
परणने आयो महमूदशाह, रूप आपरो बतायो।।

रथ में बैठ दरसण दीना, वैल नाम धरायो।
चाकर कीनो गोयन्द ने, गादी दिवाण बैठायो।।

श्री आई माताजी की बैल (रथ)